Result Mitra Daily Magazine

प्रेस व्यू (Presvu Eye Drop)

हालिया संदर्भ :

- हाल ही में एन्टोड फार्मास्यूटिकल्स ने घोषणा की है कि ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया (DCGI) ने इसकी नई को मंजूरी दे दी है।
- इस नए ड्रॉप का नाम प्रेस व्यू Presvu (Eye Drop) है, जिसे प्रेसबायोपिया से प्रभावित व्यक्तियों के लिये पढने वाले चश्मे पर निर्भरता को कम करने के लिये विकसित किया गया है।

कार्यप्रणाली :

- प्रेसव्यू में मुख्य सक्रिय घटक (दवाओं में रासायनिक यौगिक, जो शरीर पर प्रभाव डालते हैं) पिलोकार्पाइन है।
- कंपनी के अनुसार, यह यौगिक (पिलोकार्पाइन) आईरिस की मांसपेशियों को सिकोडता है, जिससे पुतली के आकार को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।
- ऐसा होने से व्यक्ति की आँखें पास की वस्तुओं पर बेहतर तरीके से ध्यान केन्द्रित कर पाता है और वह वस्तुओं को स्पष्टता से देख पाता है।

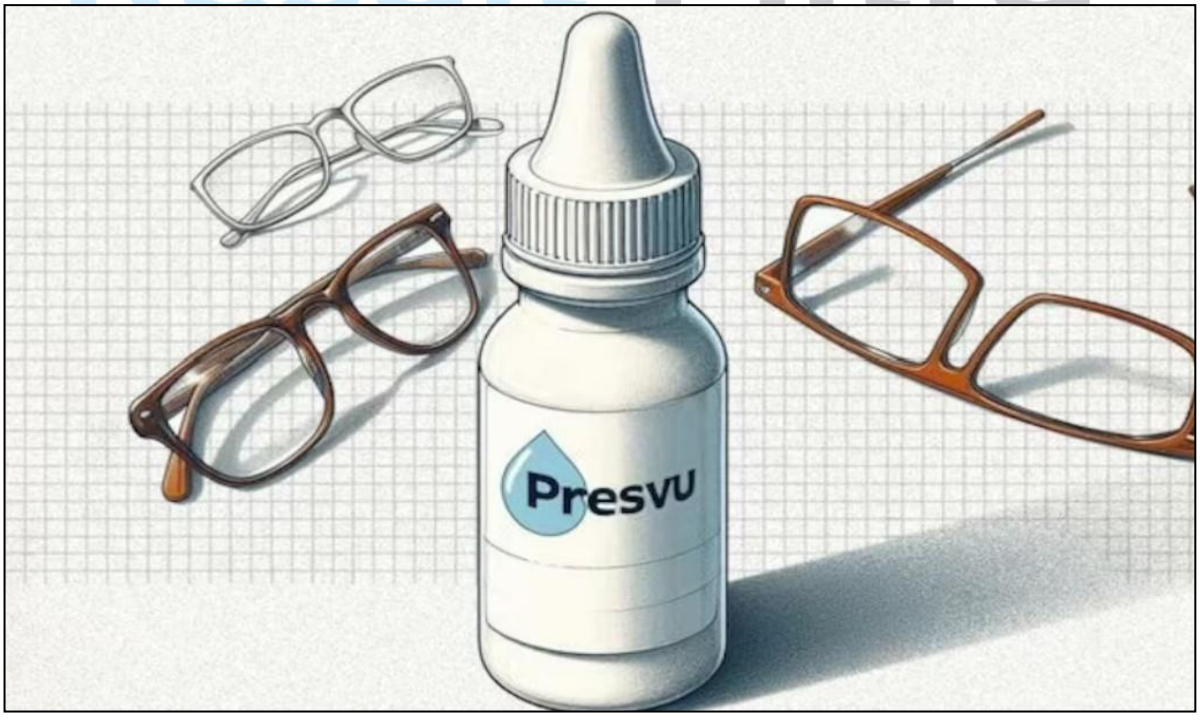

- यह दवा केवल डॉक्टरों द्वारा सलाह दिए जाने पर ही लिया जाना चाहिए तथा जिन्हें आईरिस में सूजन की समस्या है, उन्हें यह दवा नहीं लेनी चाहिए।
- इस आई ड्रॉप का प्रभाव एक बार लेने पर 4-6 घंटे तक बना रहता है।
- इसके विपरीत प्रयोग से आँखों में खुजली एवं लालिमा, भौंहों में दर्द तथा आँख के मांसपेशियों में तनाव/ऐंठन हो सकता है।

नवीन चिकित्सा प्रणाली :

- कंपनी ने यह दावा किया है कि प्रेसव्यू आई ड्रॉप भारत में अपनी तरह की पहली दवा है और उसने इसके निर्माण एवं प्रक्रिया के संदर्भ में पेटेंट के लिये आवेदन भी कर दिया है।
- हालांकि भारत में पिलोकार्पाइन यौगिक का इस्तेमाल Eye Drop में दशकों से किया जा रहा है।
- मोतियाबिंद के इलाज में भी पिलोकार्पाइन का प्रयोग किया जाता रहा है, साथ ही अन्य देशों में भी प्रेसबायोपिया के इलाज में इसका उपयोग किया जाता रहा है।
- 2021 में US फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन ने प्रेसबायोपिया के लिये पिलोकार्पाइन आई ड्रॉप को मंजूरी दी।

प्रेसबायोपिया :

- इसे जराद्दष्टि दोष के नाम से भी जाना जाता है।
- यह एक ऐसी स्थिति होती है, जब आँखे आस-पास की वस्तुएँ पर बेहतर तरीके से ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाती है।
- यह उम्र से संबंधित नेत्र-समस्या है, जो 40 वर्ष की आयु के बाद प्रभाव में आने लगती है।
- ऐसी स्थिति में आँख के अंदर प्राकृतिक लेंस की मोटाई बढने लगती है और लेंस का लचीलापन घटता जाता है, जिससे समायोजन क्षमता में गिरावट आती है।
- 2020 तक दुनिया भर में प्रेसबायोपिया से ग्रसित लोगों की संख्या 2 अरब से ज्यादा थी।
- इसके उपचार के लिये बाईफोकल लेंस का इस्तेमाल किया जाता है लेकिन यह सभी के लिये उपयुक्त नहीं होता है।
- रीडिंग ग्लासेज (पढने के चश्मे) भी एक विकल्प है, जिसका प्रयोग पीडित व्यक्ति द्वारा पढते-लिखते समय किया जाता है।

निकट दृष्टि-दोष :

- इसे मायोपिया के नाम से भी जाना जाता है।

- ऐसी स्थिति में व्यक्ति निकट की वस्तुओं को तो आसानी से देख लेता है, लेकिन दूर की वस्तुओं को वह स्पष्टतः नहीं देख पाता है।
- इसके उपचार के लिये व्यक्ति अवतल लेंस के चश्मे का प्रयोग करता है।

दूर दृष्टि-दोष :

- इसे हाइप्रोपिया के नाम से भी जाना जाता है।
- ऐसी स्थिति में व्यक्ति दूर की वस्तुओं को आसानी से देख पाता है लेकिन नजदीक की वस्तुओं को स्पष्टतः देखने में उसे समस्या होती है।
- इसके उपचार के लिये उत्तल लैंस के चश्मे का प्रयोग किया जाता है।

DCGI :

- यह भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन है, जो देश में केन्द्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन का प्रमुख होता है।
- यह देश में दवाओं के निर्माण, आयात, वितरण, बिक्री आदि के मानक तय करता है तथा विभिन्न दवाओं, टीकों एवं रक्त उत्पादों आदि के लिये लाइसेंस प्रदान करता है।
- भारत में विभिन्न दवाओं एवं टीकों के बाजार में आने से पूर्व DCGI का अनुमोदन/स्वीकृति आवश्यक होता है।

Result Mitra